भारत-विभाजन और यशपाल-कृत 'झूठासच'

वीरेन्द्र सिंह

शोध सार

हिंदी साहित्य में विभाजन पर लिखे गये उपन्यास साहित्य विपुल हैं। भारत का विभाजन मानव इतिहास की एक ऐसी ऐतिहासिक त्रासद घटना है जिसके घावक भी नहीं भर सकते। यह एक ऐसा ऐतिहासिक क्षण था जिसने आगे आने वाले भविष्य को परिभाषित कर डाला। मानव इतिहास में कभी भी इतने विराट पैमाने पर आबादी की अदला बदली नहीं हुई, जितने विभाजन के कारण बने पाकिस्तान और भारत के बीच हुई। इस त्रासदी के बारे में लिखित सरकारी आंकड़े तो नहीं हैं लेकिन आम राय यही है कि कम से कम डेढ़ करोड़ लोग अपना घर–बार छोड़कर इधर से उधर हुए थे।इस दौरान हुई लूटपाट, हत्या, बलात्कार और हिंसा में कम से कम पन्द्रह लाख लोगों के मरने का अनुमान और लाखों लोगों के घायल होने का अनुमान लगाया जाता है। इसमें केवल देश ही नहीं बंटा बल्कि मानव भी धार्मिक आधार पर बंट गया। देश की स्वतंत्रता के लिए हमें बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। उसे प्राप्त करने के लिए हमें उन सब मूल्यों एवं मान्यताओं की बलि चढ़ानी पड़ी जो स्वाधीनता संघर्ष की धुरी थी। अहिंसा हमारा मूल मंत्र था लेकिन विभाजन के फलस्वरूप देश में हिंसा का ऐसा भयानक नृत्य हुआ कि मनुष्य की रूह कांप गई। भारत विभाजन इतनी दूरगामी वाली घटना थी कि उसने भारतीय समाज परतात्कालिक प्रभाव तो डाला ही इसके प्रभाव एवं परिणामों को लाखों निर्दोश लोग किसी ना किसी रूप में आज भी सहन कर रहे हैं। भारत विभाजन की त्रासदी ने भारतीय उपमहाद्वीप के जनजीवन को तो प्रभावित किया ही साहित्यकारों को भी प्रभावित किया। हिंदी कथा साहित्य में भारत विभाजन को लेकर कहानियां, उपन्यास दोनों विधाओं में साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई। प्रस्तुत लेख में भारत विभाजन के संदर्भ में हिन्दी के लोकप्रिय उपन्यास झूठा–सच की चर्चा करेंगे।

बीज शब्द : उपन्यास, भारत विभाजन, यशपाल, झूठा–सच, साम्प्रदायिकता, शरणार्थ, राष्ट्रवाद, मुस्लिम लीग।

'मनुष्यों के देश धर्मों के देश बन गए? रब ने जिन्हें एक बनाया था रब के बंदों ने अपने अहम से उसे दो कर दिया।'[1] (झूठा सच, भाग– 1)

उपन्यास विधा आज अपने रूप एवं शिल्प के कारण साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। यह विधानिरंतर गतिशील एवं विकासमान है। विशिष्ट शिल्प और रचनात्मक क्षमता ने इस विधा की संभावनाओं को विस्तृत एवं व्यापक आयाम दिए हैं। हिंदी उपन्यास अपने शुरुआती दौर से ही सामा. जिक चेतना और अपने परिवेश से जुड़ा रहा है। भारत विभाजन संबंधी उपलब्ध साहित्य पर अगर दृष्टिपात करें तो यह स्पष्ट होता है कि विभाजन के तुरंत बाद और विभाजन के बाद के वर्षों में इससे संबंधित उपन्यास न केवल हिंदी साहित्य में बल्कि भारत की अन्य भाषाओं के साहित्य में भी लिखे गए। विभाजन निश्चय ही एक मानवीय त्रासदी थी और अगर विभाजन सांप्रदायिकता की समस्या के

समाधान के दृष्टिकोण से किया गया था तो राजनीतिज्ञों की एक भयंकर भूल थी। भारत का विभाजन माउंटबेटन योजना के आधार पर निर्मित भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम1947 के आधार पर किया गया। इस अधिनियम के आधार पर14 अगस्त को पाकिस्तान अधिराज्य (बादमें जिसे जम्हूरियतए पाकिस्तान कहा गया) और 15 अगस्त को भारतीय संघ (जिसे बाद में भारत गणराज्य कहा गया) की स्थापना हुई। इस घटना क्रम में मुख्यत: ब्रिटिश भारत के बंगाल प्रांत को पूर्वी पाकिस्तान और भारत के पश्चिमी बंगाल राज्य में बांट दिया गया। इसी तरह ब्रिटिश भारत के पंजाब प्रांत को पश्चिमी पाकिस्तान के पंजाब प्रांत और भारत के पंजाब राज्य में बांट दिया गया। यहां यह भी ध्यातव्य है कि इसी दौरान ब्रिटिश भारत में से सीलोन (अब श्रीलंका कहा जाता है) और बर्मा (जिसे अब म्यामांर कहा जाता है) को भी अलग किया गया, लेकिन इसे भारत के विभाजन में शामिल नहीं किया जाता है। इसी तरह1971 में पाकिस्तान के विभाजन और बांग्लादेश की स्थापना को भी इस घटनाक्रम में नहीं गिना जाता है। इस प्रकार 15 अगस्त 1947 ई. की आधी रात को भारत और पाकिस्तान कानूनी तौर पर दो स्वतंत्र राष्ट्र बने।

भारत विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखें तो इसके पीछे अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति ही रही। उन्होंने भारत के नागरिकों को संप्रदाय के अनुसार अलग-अलग समूहों में बांटा फलस्वरूप उनके द्वारा निर्मित नीतियां हिंदुओं और मुसलमानों के प्रति भेदभाव उत्पन्न करती रही। भारत भारत विभाजन की जमीन अट्ठारह सौ सत्तावन से बननी तैयार हो गई थी जब हिंदू और मुसल. मान एक होकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ उठ खड़े हुए थे।यह आंदोलन तो असफल रहा लेकिन मुसलमानों के प्रति ब्रिटिश शासकों की नीति में व्यापक और बुनियादी परिवर्तन आए। ऐसी नीतियां बनाई गई जिससे मुसलमान आर्थिक दृष्टि से उपेक्षित रह गए। दूसरी और हिंदू राष्ट्रवाद को उभारने के लिए वह हिंदुओं को मुसलमानों से श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए अट्ठारह सौ अट्ठावन से ही महारानी विक्टोरिया ने अनेक कदम उठाए। आगे चलकर उन्नीस सौ छह में मुस्लिम लीग की स्थापना हुईजिसने 1940 में पाकिस्तान कीमांग सामने रखी।दूसरी और क्रांतिकारी शक्तियां काफी तेजी के साथ संगठित होती जा रही थी।

1857 ई. का स्वतंत्रता संग्राम अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ा गया, हिंदू और मुस्लिमों का सामूहिकस्वतंत्रता संग्राम था जिससे यह बात स्पष्ट हो गई थी कि अगर दोनों संप्रदायों को एक रखा गयातो बहुत जल्द अंग्रेज इस देश से विदा हो जाएंगे। फलस्वरुप उन्होंने 'अपनी फूट डालो और राज करो'की नीति का अनुसरण धीरे धीरे चरम पर पहुंचा दिया। सन् 1906 ई.में ढाका में पहुंचे मुसलमान नेताओं ने मिलकर मुस्लिम लीग की स्थापना की। इन नेताओं का विचार था कि मुसलमानों को बहुसंख्यक हिंदुओं से कम अधिकार उपलब्ध हैं। उन्नीस सौ तीस ई. में मुस्लिम लीग के सम्मेलन में प्रसिद्ध उर्दू कवि मोहम्मद. इकबाल ने एक भाषण में पहली बार मुसलमानों के लिए एक अलग राज्य की मांग उठाई। उन्नीस सौ पैंतीस में सिंध प्रांत की विधानसभा में भी यही मांग उठाई गई। इकबाल और मौलाना मोहम्मद अली जौहर ने मोहम्मद अली जिन्ना को इस मांग का समर्थन करने को कहा। फलस्वरूप लाहौर में उन्नीस सौ चालीस के मुस्लिम लीग सम्मेलन में जिन्ना ने साफ तौर पर कहा कि 'वह दो अलग अलग राष्ट्र चाहते हैं। हिंदुओं और मुसलमानों के धर्म, विचारधाराएं, रीति-रिवाज और साहित्य बिल्कुल अलग अलग हैं। एक राष्ट्र बहुमत में और दूसरा अल्प मत में, ऐसे दो राष्ट्रों को साथ बांधकर रखने से अंस. तोष बढ़कर रहेगा और अंत मेंऐसे राज्य की बनावट का विनाश होकर रहेगा' इस प्रकार अंग्रेजों की वह चाल सफल हो गई जो वे चाहते थे। अंग्रेजों ने योजना बद्ध रूप से हिंदू और मुसलमान दोनों संप्रदायों के प्रति नफरत और घृणा के साथ-साथ शक को बढ़ावा दिया। मुस्लिम लीग ने अगस्त 1946 ई. में 'सीधी कार्यवाही दिवस' मनाया। इससे कोलकाता के साथ साथ-साथ देश के कई हिस्सो में भीषण दंगे हुए। जिसमें हजारों लोग मारे गए और बहुत से घायल हुए। ऐसे माहौल में सभी राष्ट्रीय नेताओं पर

दबाव पड़ने लगा कि विभाजन को स्वीकार करें, ताकि पूरे देश में युद्ध की स्थिति न आए। फलस्वरूप भारत का विभाजन हो गया। हालांकि महात्मा गांधी जैसे कुछ नेता इसविभाजन के घोर विरोधी थे। उन्होंने विभाजन का विरोध किया और कहा कि 'मेरी पूरी आत्मा इस विचार के विरुद्ध विद्रोह करती है कि हिंदू और मुसलमान दो विरोधी मत और संस्कृतियाँ हैं। ऐसे सिद्धांत का अनुमोदन करना मेरे लिए ईश्वर को नकारने के समान है।'

देश का विभाजन एक हादसे की तरह जनता पर गुजरा। विभाजन के साथ ही संप्रदाय के आधार पर जनता की अदला– बदली हुई थी। इससे दोनों देशों को अनेक आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन समस्याओं का प्रभाव शरणार्थियों के जीवन पर स्थाई रूप से पड़ा। उनके सोचने समझने की दृष्टि में बुनियादी परिवर्तन हुए क्योंकि जनता का स्थानांतरण संप्रदाय के आधार पर किया गया था इसलिए सांप्रदायिक दंगे, हिंसा, सामूहिक आक्रमण, रेलगाड़ियों में कत्लेआम धर्म परिवर्तन,बलात्कार, आगजनी आदि की घटनाएं व्यापक स्तर पर हुई, जिससे जन चेतना पर गंभीर प्रभाव पड़ा। भारत विभाजन की इस घटना ने करोड़ों लोगों को प्रभावित किया। विभाजन के दौरान हुई हिंसा में लाखों लोग मारे गए और करोडो शरणार्थियों ने अपना घर बार छोड़कर बहुमत संप्रदाय वाले देश में शरण ली।

हिंदी उपन्यास साहित्य की परंपरा और विशेष रूप से विभाजन पर लिखे गए उपन्यासो की परंपरा में यशपाल कृत 'झूठा सच' का विशेष स्थान है। 'झूठा सच' का प्रकाशन सन् 1957 से 1960 ईस्वी में हुआ था। इसके वृहद कथानक के फलस्वरूप लेखक ने इसे दो भागों में प्रकाशित किया। इस उपन्यास का प्रथम भाग 'वतन और देश'तथा द्वितीयभाग 'देश का भविष्य' है। दोनों भागों की कथा विभाजन को लेकर चलती है। इसमें घटनाओं का बाहुल्य है। 'झूठा सच' को प्रेमचंद के गोदान की यथार्थवादी परंपरा से जोड़ने का प्रयास किया गया। यह कल्पना मिश्रित यथार्थ के धरातल पर निर्मित भारत–पाकिस्तान के विभाजन के अवसर पर सामान्य जनजीवन और देश की अवस्था का विस्तार पूर्वक वर्णन करता है। इसमें राष्ट्र एवं परिवार की समस्याओं का वर्णन किया गया है। साथ ही उन समस्याओं के समाधान का भी मार्ग प्रशस्त किया गया है, जो विभाजन के समय उत्पन्न हुई। सन् 1942 से 1957 तक की विभाजन की घटनाओं को लेकर इस उपन्यास को ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक और अन्य कोटियों में रखा जा सकता है। नेमिचंद्र जैन के अनुसार ''विभाजन जैसी सर्वग्राही घटना को उन्होंने उसकी आर्थिक,राजनीतिक सामाजिक, सांस्कृतिक और वैयक्तिक समग्रता में, साथ ही उसकी गतिमानता में देखने का प्रयास किया है।''[2]

संपूर्ण उपन्यास में दो समानांतर संघर्ष कथाएं साथ साथ चलती हैं। दोनों कथाओं का राजनीति से तो संबंध है ही। साथ ही उसमे बहुत सी प्रासंगिक कथाएं भी जुड़ी हुई है जो किसी ना किसी रूप में मुख्य कथा को सहयोग प्रदान करती हैं। इसीलिए आलोचकों ने इस उपन्यास को महाकाव्यात्मक उपन्यास की संज्ञा दी है। रामदरश मिश्र के अनुसार'' यह उपन्यास अपने स्वरूप में महाकाव्यात्मक है। किंतु प्रगति में भी है या नहीं इस पर आलोचकों में मतभेद है।''[3]

उपन्यास का कथानक विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। विभाजन की पूर्वपीठिका, विभाजन की विभीशिका और उसके उत्तर प्रभाव का बहुत विशद् और जीवन्त चित्रण इसमें वर्णित है।कथानक का आरंभ स्वतंत्रता पूर्व सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन आंदोलन से भारत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर होता है, जो अपने में 1947 तक के भारतीय जीवन की राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का समावेश करते हुए समाज के सभी वर्गों के जीवन की कहानी का प्रगतिशील चित्रण है। कथानक का प्रारंभ लाहौर के 'भोलापांधे' नामक गली से होता है। मास्टर रामलुभाया पुरी की दो संतानों– पुत्र जयदेवपुरी और पुत्री तारा पुरी से उपन्यास का मुख्य

कथानक संबंधित है। दरिद्र पंजाबी परिवार के ये दोनों सदस्य कॉलेज में पढ़ते हुए नवीन चेतना के समर्थक हैं तथा रूढ़िवाद और साम्प्रदायिकता के कट्टर विरोधी हैं। शिक्षित एवं उत्साही होने के कारण भारत कै राजनैतिक आंदोलन में भाग लेते हैं जिसकी वजह से जयदेवपूरी1942 के आंदोलन में जेल भी जाता है। जेल से वापस आने के बाद पुरी 'पैरोकार' पत्र में नौकरी करता है, परन्तु हिंदू–मुस्लिम एक्य संबंधी उदार विचारों के कारणों उसे नौकरी छोड़ने पड़ती है। तारा कुशाग्र बुद्धि बालिका है। पा. रिवारिक अर्थव्यवस्था कमजोर होने के कारण वह डॉक्टर प्रेमनाथ के घर पर लड़कों को पढ़ाती है। भाई से प्रोत्साहित होकर तारा एम.ए. करती है। उसमें साम्यवादी मुस्लिम असद के प्रति आकर्षण है। ऐसे में बी.ए.में दो बार फेल एवं चरित्रहीन सोमराज सेउसकी सगाई हो जाती है। जिसे परीक्षा में नकल करने तथा निरीक्षक को पीटने के कारण यूनिवर्सिटी से निकाल दिया गया है। तारा की पढ़ाई रोकने का प्रयत्न भी किया जाता है। सांप्रदायिक दंगों के बीच तारा के विवाह की तैयारियां होने लगती हैं। तारा संप्रदाय और बिरादरी की खाई लांघना चाहती है परंतु राजनैतिक परिस्थितियों के कारण असद भी उसका साथ नही देता।

जयदेवपुरी'नयाहिंदप्रैस' केमालिक पंडित गिरधारीलालकीबेटीकनककोचाहताहै।कनक के पिता पुरी के साहित्यिक गुणों के प्रशंसक है परन्तु उसे अपने दामाद के लिए उपयुक्त नहीं मानते। जयदेव स्वतंत्र प्रेम और हिंदू मुस्लिम एकता का हिमायती होते हुए भी प्रतिक्रियावादी है। इसी से असद के साथ तारा को देखकर वह घृणा ही प्रकट करता है। यहीं से भाई बहन के मन में ऐसा मनमुटाव होता है कि उपन्यास के अंत तक वे एक दूसरे के शत्रु बने रहते हैं। कांग्रेस द्वारा पाकिस्तान की स्वीकृति होते ही लाहौर में हुए दंगों के बीच आत्महत्या में असफल तारा का विवाह सोमराज के साथ हो जाता है। सोमराज द्वारा उसका उत्पीड़न, मुसलमानो द्वारा मकान में आग लगा देना, इस्लाम के नाम पर उनके सतीत्व खंडन का प्रयास,मुसलमान बनाने का प्रयत्न, तत्पश्चात गफूर नामक एक और क्रूर गुंडे के हाथों में पड़कर उसे अनेक हिंदू स्त्रियों केसाथ शेखपुरा नामक एक स्थान के मकान में बंद कर दिया जाना और उसके पश्चात भारत सरकार द्वारा भेजे हुए स्त्री उद्धारक दल द्वारा अन्य नारियों के साथ मुक्त किया जाना, उसका पुन: असद से मिलन होना, असद द्वारा इस्लाम को स्वीकार करने पर और लाहौर में रहने की सहमती पर ही विवाह का आश्वासन, लेकिन असद के आने से पूर्व ही मुक्त की हुई है सभी स्त्रियां के साथ'वतन' छोड़कर अपने 'देश' भारत आ जाना आदि कथानक वर्णित हैं ।

इधर जयदेव और उसकी प्रेमिका कनक 15 अगस्त 1947 के पूर्व ही भारत चले गए थे। कनक बहन–ब. हनोई के परिवार के साथ नैनीताल में थी। जयदेव जालंधर में कांग्रेसी नेता सूद के निकट आकर संपन्न हो गया है। कनक परिवार के साथ दिल्ली आई फिर वही तथा बाद में लखनऊ में नौकरी करने लगी। वहां साम्यवादी गिल के परिचय में आकर आत्मसमर्पण करने वाली ही थी तभी जीजाजी नैयर से उसे जयदेव के पता मिला। कनक जयदेव के पास पहुंची तब वह उर्मिला को रखे हुए था। जयदेव ने नर्सिंग का काम सीखने के बहाने उसे निकाल दिया। कनक कुछ वर्ष तक जयदेव के साथ रही परन्तु प्रतिक्रियावादी जयदेव के कारण दु:खी होकर उसे त्यागकर पुन: गिल के साथ रहने लगी। तारा भी अमृतसर व दिल्ली के शरणार्थ कैंपों में रहकर अनेक संघर्षों से गुजरती हुई सरकारी नौकरी प्राप्त होते ही भारत सरकार में अंडर सेक्रेटरी पद पर पहुंच गई और डाक्टर प्राणनाथ से विवाह करके सम्मानपूर्वक रहने लगी। इस प्रकार इस उपन्यास में विभाजन के समय का इतिहास, विभाजन से पूर्व और पश्चात की राजनीतिक उथल–पुथल, सामाजिक जीवन और पंजाब का सांस्कृतिक जीवन अपने संपूर्ण रूप में चित्रित करने का प्रयास है। सांप्रदायिक झगड़े, विस्थापितों के बसने की कथा, शरणार्थ कैम्पों का यथार्थ वर्णन, स्त्री शोषण आदि चित्रित हैं।

''भारतीय उपन्यास के स्वरूप की निजता उसके रूप की विशिष्टता में है। यह कोई बहस की बात नहीं

है कि अंतर्वस्तु से रूप का, यथार्थ चेतना से शिल्प चेतना का और जिंदगी की वास्तविकता से उसकी भाषा का गहरा रिश्ता होता है। उपन्यास की कला दृष्टि बहुत कुछ लेखक की यथार्थ चेतना से जुड़ी होती है।''[4] उपन्यास का मुख्य विषय विभाजन से पूर्व भारत के राजनैतिक परिदृष्य को सामने लाना है। एकऔर कांग्रेस के नेतृत्व में स्थानीय उभरते हुए पूंजीपति वर्ग की सहायता से राष्ट्रीय आंदोलन अपनी गति पकड़ रहा था तो दूसरी और ब्रिटिश सत्ता की शक्ति धीरे–धीरे क्षीण होती जा रही थी। साम्राज्यवादी अंग्रेज यह अच्छी तरह जानते थे कि कांग्रेस के नेतृत्व में यदि राष्ट्रीय आंदोलन सफल ना हो सका तो आंदोलन की बागडोर किसान और मजदूरों के हाथ में आ जाएगी। यशपाल ने इस स्थान पर राष्ट्रीय आंदोलन का वर्ग चरित्र भी हमारे सामने रखा है। साम्राज्यवादी सरकार इसी में अपना हित समझती है कि जनता के सही निर्णय लेने से पहले कांग्रेस के हाथ में देश की बागडोर दे दी जाए। जनता के अंदर सही वर्ग चेतना न पैदा होने देने के लिए बार–बार सांप्रदायिकता के सवाल को उछाला जाता है और अंतत: देश का विभाजन हो जाता है। डॉ. कंवरपाल सिंह के अनुसार ''देश का विभाजन एक महत्वपूर्ण घटना थी जिसने पूरे देशवासियों के मन पर एक भयानक छाप छोड़ी है। हिंदी के आधुनिक उपन्यासकार अपने–अपने ढंग से समस्या के विभिन्न पक्षों को हमारे सामने लाते हैं। 'झूठा सच' में सांप्रदायिक दंगों के दौरान मानव क्षतिऔर उसके भयंकर परिणामों को सामने रखा गया है। लेखक की इस संबंध में दृढ़ राय है कि सांप्रदायिकता का जवाब वर्ग चेतना से लैस किसान–मजदूर ही हो सकते हैं जो देश को सही दिशा में ले जाने की शक्ति रखते हैं। लेकिन शासक वर्ग की सुनियोजित नीति के फलस्वरूप देशवासियों को सांप्रदायिकता का अभिशाप भोगना पड़ता है।''[5]

उपन्यास में एक और विभाजन के केंद्र में कार्य करने वाली राजनीति को उद्घाट्ति किया गया है तो दूसरी और राजनीति के उस स्वरूप को भी उभारा गया है जो देश में सांप्रदायिक दंगे करवाती है और हिंसक वातावरण पैदा करती है । ''भारत विभाजन के समय धर्मोन्माद का जो प्रालेय तांड्व हुआ उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में नहीं है। लूटपाट, हत्या, मारकाटा आगजनी, बलात्कार का एक अटूट सिलसिला चलता रहा। वतन और देशअलग–अलग हो गए। इससे देश की समाज और अर्थव्यवस्था तो क्षतिग्रस्त हुईही,सांस्कृतिक व्यवस्था भी परिवर्तित हुई। इसका प्रभाव देश के भावी निर्माण पर भी पड़ा।

यशपाल ने इस उपन्यास में खांड्ति देश के गहरे घावों का पूरे विस्तार से चित्रण किया है।''[6]कांग्रेस और मुस्लिम लीग का समझौता संभव न होने पर सांप्रदायिकता की आग भड़कती है। उसमें लीग का आंदोलन बढ़ता देख खिजर मिनिस्ट्री पंजाब के अनेक नगरों में धारा 144लगा देती है लेकिन लाहौर में मुस्लिम लीग उसका विरोध करती हुई अहिंसात्मक सत्याग्रह का आरंभ करती है। उसमें मुस्लिम लीग के बड़े–बड़े नेता जेल भी जाते हैं। फिर भी प्रतिदिन हिंसात्मक जुलूस निकलते हैं और उसके स्वयं सेवक नारे लगाकर आगे बढ़ते रहते हैं जैसे ''अल्लाह हू अकबर! मुस्लिम लीग जिंदाबाद! हिंदू–मुस्लिम एक हो!''ऐसे नारे लगाते हुए अनेक लोग गिरफ्तार हो जाते हैं। लेकिन खिजर के इस्तीफा दे देने के बाद गवर्नर द्वारा हुकूमत संभाल ली जाती है। जिसकी वजह से मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता बिल्कुल नए नारे लगाते हुए लाहौर की सड़कों पर निकलते हैं। ''मुस्लिम लीग जिंदाबाद! पाकिस्तान लेके रहेंगे! लीग की वजारत कायम हो!''[8]जुलूस को देखकर लोगों मे सहानुभूति नहीं बल्कि आतंक का अनुभव होता है। इन सब की वजह से लाहौर के हिंदू सहम रहे थे। लीग का बढ़ता जाता आंदोलन जाने क्या रंग लाएगा। लाहौर के अखबार अपनी टिप्पणियों में सरकार को इस परिस्थिति से सावधान होजाने की चेतावनी दे रहे थे 'पैरोकार' में पुरी दो बार लिख चुका था ''सांप्रदायिकता उत्तेजना से भरी राजनीति और सांप्रदायिक घृणा और द्वेश का तूफान क्षितिज पर उठ रहा है। यह तूफान सार्वज. निक नागरिक जीवन का अंत कर देगा। उस समय हिंदू–मुस्लिम इत्तहाद के नारे याद नहीं रहेंगे...।''[9] इनसब के साथ तत्कालीन परिवेश की सामान्य घटनाओं को भी सांप्रदायिक रंग दिया गया । साधारण

घटनाओं को राजनीतिक रंग दिया जाने लगा। जैसे सोमराज साहनी परीक्षा में नकल करता हुआ मुसलमान अध्यापक द्वारा पकड़ा जाता है। लेकिन प्रेस इस घटना को हिंदू मुसलमान के झगड़े के रूप में प्रस्तुत करता है। जिससे पूरे शहर में तनाव का वातावरण पैदा होता है। लेखक ने यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि पाकिस्तान की मांग को लेकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग में तनाव जैसे- जैसे बढ़ता गया वैसे-वैसे सांप्रदायिक दंगों की संख्या में वृद्धि होती गई। इसकी वजह से लाहौर के साथ साथ सम्पूर्ण देश की राजनैतिक और सामाजिक स्थिति में तनाव निरंतर बढ़ता गया।

कर्फ्यू लगना, अनेक स्थानों पर आग लगने की घटनाएं, छुरेबाजी की घटनाये, लोहे की कुर्ती टोपी का कुछ लोगों द्वारा प्रयोग करना, इस मारकाट का भयानक और यथार्थ चित्र लेखक द्वारा प्रस्तुत किया गया है। ''सांप्रदायिक विद्वेश की आग में मानवीय संवेदनाएं किस प्रकार मर जाती हैं, और आदमी जानवर बन जाता है, इसका बोध कराने में यशपाल को बहुत अच्छी सफलता मिली है।... विस्थापितों के काफिलों तथा शरणार्थियों के शिविरों के चित्रण में उपन्यासकार के विजन की चमक पाठक को अभिभूत कर देती है। अभागे विस्थापितों के संकट पूर्ण पलायन में हैवान बने आदमी की क्षुद्रता और बीभत्स आचरण के साथ-साथ मानवीय प्रेम और सहानुभूति के क्षण बड़े ही मार्मिक हैं।''[10]पंजाब असेंबली के तार खींचकर मुसलमानों को मारना, पाकिस्तान न देने की बात कहना इतिहासकी घटना है। मास्टर तारा सिंह की इस घोषणा से जो कुछ अप्रिय घटना की आशंका भी थी किंतु ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार करने के स्थान पर सब अपने अपने दृष्टिकोण से विचार करते हैं। जैसे कांग्रेसी अपने चरणों में हरे रंग फाड़ देते हैं, लोग खुश होते हैं। यह सांप्रदायिक मानसिकता विशेष रूप से निम्न मध्यमवर्गीय परिवारों में विकसित हुई जो दंगों के मूल में कार्य कर रही राजनीति को समझने में असमर्थ थी। मोना पांडे की गली में समझाने आई दो महिलाओं की बात सुनकर मोहल्ले की औरतों को यह बात जल्दी समझ में आ जाती है कि मुसलमान ही दलित एवं हिंदुओं का कत्ल करने वाले हैं तारा जब रूठ जाती है तो वे मानती हैं कि मुसलमान ही लड़ते हैं हिंदू बेचारे कहां लड़ते हैं। सांप्रदायिक दंगों के दौरान मरने वाले लोग अधिकतर गरीब है। जब खुदा तुम्हारे कातिल का नाम पूछेगा तो तुम्हारी उंगली किसकी तरफ उठेगी, क्या खुदा नहीं जानता कि तुम्हारे कत्ल के लिए उत्तेजना दिलाने की जिम्मेदारी उन नेताओं पर है जो तुम्हारे जैसे इंसानों को शासन के सिंहासन पर पहुंच सकने का जीना बनाने के लिए जनता का ईंट गारे की तरह प्रयोग करना चाहते हैं। ''भारतीय उपन्यास भारतीय जीवन और संस्कृति को रूपायित करते हैं। भारत की मिट्टी, यहां के दुख-दर्द और संघर्ष की कथा में निबद्ध करने का प्रण उठाया भारत के उपन्यासकारों ने''[11]स्वाधीनता के दिनों का भारतीय जीवन और संस्कृति का चित्र है झूठा सच।

इस उपन्यास में विभाजन के राजनीतिक पक्ष को प्रस्तुत करने के साथ-साथ उस ऐतिहासिक और सांस्कृतिक हादसे के विभिन्न पहलुओं से उत्पन्न होने वाली आंतरिक समस्याओं व उसमें अंतर्निहित मानवीय करुणा की बहुआयामी अभिव्यक्ति दिखाई देती है। ''मधुरेश झूठा सच उपन्यास को राष्ट्रीय मोहभंग सेजोड़ते हैं वे लिखते हैं -झूठा सच राष्ट्रीय मोहभंग का आख्यान है। उपन्यास के आरंभ में जयदेव पुरी राष्ट्रीय विचारों के एक आदर्शवादी बुद्धिजीवी युवक के रूप में सामने आता है जो न्याय और सच के लिए जोखिम उठाता है और अपने विचारों के लिए जेल भी जाता है अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़कर। लेकिन फिर जल्दी उसकी पितृसत्तात्मक मानसिकता से पहले उसकी बहन तारा का मोहभंग होता है और आगे चलकर उसकी पत्नी कनक का जो उसके दोहरे मानदंडों के लिए उसकी आलोचना करती है। बाद में जब वह राजनीति में आता है तो मोहभंग की प्रक्रिया एक राष्ट्रीय रूपक में बदल जाती है। ...झूठा सच में मोहभंग की यह प्रक्रिया एक दोहरे स्तर पर चलती है। एक और लोगों का पुरी से मोहभंग होता है तो दूसरी ओर स्वाधीन देश की व्यवस्था और सत्ता से स्वयं पुरी का मोहभंग होता है और फिर अवसर पाते ही वह धीरे-धीरे इस व्यवस्था का ही एक प्रतिनिधि बन जाता है। उसका यह

वैचारिक विचलन ही वस्तुत: एक राष्ट्रीय रूपक का निर्माण करता है।''[12]भारत विभाजन के कारण विभाजन के पहले और बाद में मानवीय संबंधों में जो कटुता एवं दरार उत्पन्न हुई, जो नई तरह की विकृतियां उत्पन्न हुई उन्हें उपन्यासकार ने कथा के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। बदली हुई परिस्थि. तियों के कारण मनुष्य की परिवर्तित मानसिक तथा विभाजन के कारण विघटित मानव मूल्यों और उसके फलस्वरुप मानव की निराशा, द्वन्द और दुविधा के संवेदनात्मक चित्र इस उपन्यास में अंकित हुए हैं। विभाजन के प्रभाव से अपना वतन छोड़ने को विवश असहाय शरणार्थियों की व्यथा, अपहृत स्त्रीयों की वेदना तथा उनकी समस्याओं एवं विभाजन से जुड़ी मनुष्य की क्रूर मानसिकता के उद्घाटन के साथ–साथ इन सब के प्रति जिम्मेदार अवसरवादी राजनीति के प्रति आक्रोश का स्वर भी इस उप. न्यास में मुखरित हुआ है। झूठा सच राजनीतिक आकांक्षाओं के कारण मनुष्यों के देश को धर्मों के देश में बदल देने की त्रासदी का उद्घाटन करता है इसमें धर्म और राजनीति की मानव विरोधी प्रगति पर लेखक ने सब कहीं अपना ध्यान केंद्रित किया है इस विभाजन की विभीषिका को स्त्रियों ने सबसे अधि ाक झूला सामाजिक अपराध और लोकाचार के कारण वापस लौटी अनेक स्त्रियों को परिवार में वापस नहीं लिया गया बनती अपने घर की चौखट पर सिर फोड़ कर अपनी जान दे देती है उसकी ससुराल वाले उसे स्वीकारने को तैयार नहीं है क्योंकि इस बीच में जाने कहां कहां रही है और क्या–क्या किया है एक अन्य दृश्य समाजसेविका कौशल्या देवी की देखरेख में शेखुपुरा से आई स्त्रियों के जत्थे का है उसमें भी चिंता नामक एक ऐसी ही होती है उसके पिता और परिवार के अन्य लोग नौगढ़ में मिल जाते हैं लेकिन वे लोग उसे अपने साथ ले जाने को तैयार नहीं होते यह कहकर छुट्टी पा लेते हैं कि हमने तो ब्याह दी अब ससुराल वाले जाने। कसौटी पत्रिका के एक लेख में मधुरेश लिखते हैं ''जनता की समस्याओं के प्रति घोर उपेक्षा और उपभोक्तावाद के प्रति बढ़ता हुआ नेताओं का आग्रह देश की स्वाध ीनता को एक झूठी और नकली आजादी में बदल देता है। समाजवाद और घोषित आर्थिक विकास की कल्याणकारी योजनाएं उसी प्रकार झूठी साबित होती है जैसे सोभराज से हुआ तारा का विवाह, जो होकर भी वस्तुत: हुआ नहीं। ये ही वे तत्व हैं जो देश की स्वाधीनता के इतने बड़े 'सच' को 'झूठा सच' में बदल देते हैं।''[13]

संदर्भसूची:

[1] यशपाल, झूठासच, भाग–1, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010, पृष्ठ129।

[2] चमनलाल गुप्ता, यशपाल के उपन्यास : सामाजिक कथ्य,शारदाप्रकाशन दिल्ली,संस्करण1986,पृष्ठ126।

[3] रामदरश मिश्र, हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 2016,पृष्ठ 302।

[4] मैनेजर पांडेय, उपन्यास और लोकतंत्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2018, पृष्ठ 127।

[5] रामदरश मिश्र, हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 2016,पृष्ठ 302।

[6] बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली,संस्करण 2004, पृष्ठ472।

[7] यशपाल, झूठासच,भाग–1, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010,पृष्ठ 75।

[8] यशपाल, झूठासच, भाग–1, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010, पृष्ठ 98।

[9] यशपाल, झूठासच, भाग–1, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण2010, पृष्ठ 75।

[10] गोपाल राय, हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2005, पृष्ठ 203।

[11] सत्यकाम, भारतीय उपन्यास की दिशाएं, सामयिक पेपरबैक नई दिल्ली, संस्करण 2020,पृष्ठ 115।

[12] नंदकिशोर नवल (संपादक), कसौटी (पत्रिका), अंक15, पुनश्च पटना, 2004, पृष्ठ162।

[13] नंदकिशोर नवल (संपादक), कसौटी (पत्रिका), अंक15, पुनश्च पटना, 2004 पृष्ठ 165।